प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद हैं? 11.2.68

ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं। रुहानी बाप भी कर्मेंद्रियों से सुनते हैं। यह है नई बात। दुनियां में और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझते हैं। जैसे टीचर पढ़ाते है तो स्टुडेंट का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रजिस्टर शो करता है। रजिस्टर से उनकी पढ़ाई और चलन का पता पड़ जाता है। मूल है ही पढ़ाई और कैरेक्टर। यह तो है ईश्वरीय पढ़ाई जो कोई पढ़ा न सके। रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत के सृष्टि चक्र की नालेज है। यह तो कोई भी मनुष्य सारी दुनियां में नहीं जानते हैं। ऋषि–मुनि जो इतने पढ़े–लिखे अथॉर्टी होते हैं वह प्राचीन ऋषि–मुनि खुद कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं तो नास्तिक ठहरे ना। तुम भी रचता को थोड़े ही जानते थे। बाप को ही आकर अपनी पहचान देनी पड़े। गाया भी जाता है यह है कांटों का जंगल। जंगल को आग जरूर लगती है। गुल2 बगीचे को कब आग नहीं लगती ;क्योंकि जंगल सारा (सूख) जाता है, बगीचा गीला होता है। गीले को आग नहीं लगती। सूखे जंगल को आग झट लग जावेगी। बगीचे को आग लगे ऐसा कब सुनें नहीं होंगे। तो यह भी बेहद का जंगल है। इनको आग तब लगी थी जब (बगीचे) की स्थापना हो (गई थी)। बगीचा अभी गुप्त स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो हम बगीचे के फूल खुशबूदार देवता बन रहे हैं। उनका नाम ही है स्वर्ग। इनमें तो कितनी बदबुयें हैं। नाम ही है नर्क। वैश्यालय। तुम कहां भी प्रदर्शनी आदि में स्वर्ग और नर्क या बगीचा और जंगल पर समझाय सकते हो। वंडर है तुम कितना समझाते हो फिर भी बुद्धि में नहीं बैठता। जो इस धर्म के ही नहीं होंगे तो उनकी बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। एक कान से सुना ,दूसरे से निकाला। सतयुग–त्रेता में भारतवासी कितने थोड़े होंगे। फिर द्वापर–कलियुग में वृद्धि हो जाती है। वहां एक बच्चा, यहां फिर 4/5बच्चे। तो वृद्धि होती जाती है ना। भारतवासी ही जो अभी हिंदू कहलाते हैं वास्तव में देवता धर्म के थे। और कोई भी अपने धर्म को नहीं भूलते हैं। यह भारतवासी ही हैं जो अपने धर्म को भूलते हैं। तो कितनी वृद्धि हो जाती है। इतने सब ढेर मनुष्य सब तो ज्ञान नहीं लेंगे। तुम हरेक अपनी अवस्था को भी समझ सकते हो। हमने भक्ति कितनी की है। थोड़ी भक्ति की होगी तो ज्ञान भी थोड़े ही उठावेंगे। बहुत भक्ति की है तो बहुतों को उठावेंगे। बहुतों को समझावेंगे। ज्ञान नहीं उठा सकते तो समझो भक्ति भी थोड़ी की है। फल भी थोड़ा मिलता है। हिसाब है ना। बाबा को एक बच्चे ने और धर्म वालों के जन्मों का भी हिसाब निकाल भेजा था कि इस्लामी के इतने जन्म ,बौद्धियों के इतने जन्म होने चाहिए। बुद्ध भी धर्मस्थापक हैं। उनके पहले कोई तो बुद्ध था नहीं। एक में बैठ प्रवेश कर धर्म स्थापन किया। फिर एक से वृद्धि होती है। यह भी एक प्रजापिता है। एक से कितने वृद्धि होते हैं। तुमको तो राजा बनना है नई दुनियां में। यहां तो बनवा में हो। शौक नहीं रहना चाहिए। हम अच्छे कपड़े डायक्रान के पहने। अच्छी साड़ी पहने। यह सब देहाभिमान है। जो मिला सो अच्छा। इस दुनियां में बाकी थोड़ा रोज रहना है। यहां उंचे कपड़े पहनेंगे तो फिर वहां कम हो जावेगा। यह पहनूं ,यह करूं, यह भी छोड़ना पड़े। आगे चल तुम बच्चों को आपे ही सा0 होते रहेंगे। तुम खुद कहेंगे यह तो बहुत सर्विस करते हैं। कमाल है। यह जरूर उंच नम्बर लेगा। फिर आप समान भी बनाते रहते हैं। दिन प्रतिदिन बगीचा तो बड़ा होने का है। जितने देवी–देवताएं सतयुग–त्रेता के हैं वह सब यहां बनने के हैं। फिर प्रत्यक्ष हो जावेंगे। अभी तुम गुप्त पद पा रहे हो। तुम जानते हो हम पढ़ते हैं मृत्युलोक में, पद फिर अमरलोक में पावेंगे। ऐसी पढ़ाई कब देखी? यह वंडर है ना। पढ़ना पुरानी दुनियां में, पद नई दुनियां में पाना। पढ़ाने वाला भी वही है जो अमरलोक की स्थापना, मृत्युलोक का विनाश कराने वाला है। वंडरफुल बात है ना। तुम्हारा यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह युग बहुत छोटा होता है। इनमें ही बाप आते हैं पढ़ाने लिए। आने से ही पढ़ाई शुरू हो जाती। तब ही बाबा कहते हैं शिवजयंति सो गीता जयंति। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं।

उन्होंने तो कृष्ण सांवरा का नाम रख दिया है। अभी जब यह भूल कोई समझे। कितने बड़े2 आदमी म्युजियम में आते हैं। ऐसे नहीं कि वह बाप को पहचान लेते हैं। बिल्कुल ही नहीं। इसलिए फार्म भराना चाहिए तो मालूम पड़े कुछ सीखा है। बाकी यहां आकर क्या करेंगे? जैसे साधू–महात्माओं के पास जाते हैं। यहां तो वह बात नहीं। इनका तो वही साधारण रूप है। वही ड्रेस आदि है ,फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। समझते हैं यह तो जवाहरी था। वह था विनाशी रत्नों का जवाहरी। अभी बने हैं अविनाशी ज्ञान रत्नों का जवाहरी। तुम सौदा भी बेहद के बाप से करते हो। जो बड़ा सौदागर,रत्नागर है। तुम हरेक अपने को समझो हम रूप–बसंत हैं। हमारी आत्मा में ज्ञान की यह रत्न लाख रुपये की है। वह भक्तिमार्ग के तो हैं पत्थर। गीता भगवद–शास्त्र आदि जो पढ़ते हैं वह पत्थर ही पत्थर है। जिससे पत्थरबुद्धि ही बन जाते हैं और यह ज्ञान रत्न सुनने से ही पारसबुद्धि बन जाते हैं। वह कितना शास्त्र आदि पढ़ते हैं उतना गिरते ही जाते हैं। उसमें हैं ही झूठे पत्थर। उनको रत्न नहीं कह सकते। यह भी समझ की बात है ना। कोई जो अच्छे समझू सयाने हैं वह समझ और धारण करते हैं। अगर धारणा नहीं होती तो कोई काम का नहीं। झोली में टूंग है तो सारा बह जाता है। बाप कहते हैं तुमको हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। दान देते रहेंगे तो भरतू होते रहेंगे। नहीं तो कुछ भी धारणा नहीं होगी। पढ़ते ही नहीं। कायदे अनुसार चलते ही नहीं। इसमें सब्जेक्ट बहुत अच्छी चाहिए। 5विकारों से बिल्कुल दूर जाना है। तुम करांची में बड़े अच्छे फर्स्टक्लास थे। सबसे पूछा जाता था तुम कितने रोटी खावेंगे। लिस्ट रहती थी। नियमअनुसार ही खाना चाहिए ना। अभी तो माया के हबछ बेताला कर देती है। बाप ने समझाया है त्यौहार आदि जो मनाई जाती है वह सब इस समय के हैं। रखड़ी बंधन भी अभी का है। मनुष्य इसका अर्थ थोड़े ही समझते हैं कि रखड़ी क्यों बांधी जाती है। वह तो अपवित्र होने ही बांधते हैं। आगे ब्राह्मण लोग बांधते थे। अभी छोकड़ियां अपने भाई को बांधती हैं खर्ची के लिए। पवित्रता की तो बात ही नहीं। रखड़ियां भी देखो कैसी फैंसी बनाते हैं। तो यह दीपमाला, दशहरा आदि सब संगमयुग के हैं। बाप ने जो एक्ट की है वह फिर भक्तिमार्ग में चली आती है। बाप तुमको सच्ची गीता सुनाकर यह बनाते हैं। वह गीता तो जन्मजन्मांतर पढ़ते (आये) हो। क्या यह बनते हो? पढ़ते2 और ही थर्ड ग्रेड बन पड़े हो। फिर अभी तुम फर्स्ट ग्रेड में जाते हो। सत्यना0 की कथा भी यह राजयोग हो गया। तुम नर से नारायण बनते हो। तो अब तुम बच्चों को सारी दुनियां को जगाना है। कितनी ताकत चाहिए। योग की ताकत से ही तुम कल्प2 स्वर्ग की स्थापना करते हो। योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश। अक्षर ही दो है। अल्फ और बे। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। साइंस बल भी बाहू का बल है। तुम्हारा ज्ञान बिल्कुल ही गुप्त है। तुम जो सतोप्रधान थे सो अब तमोप्रधान बने हो। फिर अभी सतोप्रधान बनना है। हरेक चीज़ नई और पुरानी जरूर होती है। नई दुनियां में क्या नहीं होगा? पुरानी दुनियां में तो कुछ भी नहीं है। जैसे एकदम खोखा है। कहां भारत स्वर्ग, कहां भारत नर्क। रात–दिन का फर्क है। (यह) तो रावणराज्य है ना। रावण को जलाते हैं ;परंतु अर्थ जरा भी नहीं समझते। अभी तुम समझते हो क्या2 करते रहते हैं। झाड़ की एक बीमारी होती है। वह टुकड़ा लेकर पाग में रखते हैं। कहते हैं हम लंका लूट कर आये हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। तुम्हारे में कल अज्ञान था, आज ज्ञान है। कल तुम नर्क में थे आज स्वर्ग में जा रहे हो रियलिटी। ऐसे नहीं जैसे वह लोग सिर्फ कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तुम स्वर्ग में चले जावेंगे। फिर यह नर्क होगा ही नहीं। कितने समझने की बातें हैं। यह सब है सेकेंड की बात। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह सभी को बतलाते रहो। बोलो, तुम यह थे फिर 84जन्म लेते2 यह बने हो। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गए हो फिर सतोप्रधान बनना है। आत्मा तो विनाश नहीं होती। बाकी उनको तमोप्रधान से सतोप्रधान तो फिर बनना

ही पड़े। बाबा किसम2 से समझाते रहते हैं। मेन बैटरी कब पुरानी होती नहीं। बाबा सिर्फ कहते हैं अपन को छोटी आत्मा समझो। कहते भी हैं इनकी आत्मा निकल गई। आत्मा संस्कारों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेता है। सभी आत्माओं का (को) अब वापस जाना है। यह भी ड्रामा है। सृष्टि का चक्र रिपीट होता रहता है। पिछाड़ी में जितने मनुष्य होंगे उतनी आत्माएं जरूर। हिसाब निकालते हैं तो कहते हैं इतने मनुष्य हैं। ऐसे क्यों नहीं कहते इतनी आत्माएं हैं। बाप कहते हैं बच्चे, मुझे कितने भूल गए हो। सभी का फिर मुझे ही कल्याण करना है। तब तो पुकारते हैं ना। तुम बाप को इतना नहीं समझते हो। तुम बाप को क्यों भूल जाते हो? बाप थोड़े ही बच्चों को भूलेंगे। यह हो नहीं सकता। बाप आते ही हैं पतित आत्माओं को पावन बनाने। यह गउमुख ठहरा ना। बैल की तो बात ही नहीं। यह भाग्यशाली रथ है ना। बाबा तुम बच्चों को ... कहते हैं शिवबाबा को हम सिंगारते हैं। यह पक्का याद रहे। शिवबाबा को याद करने से बहुत फायदा है। ब्रह्मा का नाम भी न लो। इसलिए बाबा, मम्मा का फोटो रखना भी बाबा पसंद नहीं करते। कब2 खयाल आता है सब फोटो तोड़–फोड़ निकाल देवें। बाकी त्रिमूर्ति झाड़ में तो है ही। इनके द्वारा बाप पढ़ाते हैं। तो इनको थोड़े ही याद करना है। इनका फोटो तो कब भी लो नहीं। नहीं तो फंस मरेंगे। मम्मा की फोटो भी क्यों? भक्त लोग अपने गुरू का चित्र रखते हैं। यह कोई गुरू थोड़े ही हे। गुरू तो शिवबाबा है। बलिहार उस पर ही जाना है। यह भी उन पर बलिहार गया ना। एक दिन यह मम्मा–बाबा के फोटोज़ भी गुम कर देंगे। तुम सभी स्टुडेंट हो ना। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। फिर यह फोटोज़ क्यों रखना चाहिए? वास्तव में मम्मा की फोटो रखना भी बेकायदे हैं। बहुतों ने मम्मा के पिछाड़ी पढ़ाई भी छोड़ दी। अपना बेरा (बेड़ा) ही गर्क कर दिया। मम्मा क्यों गई? यह क्यों हुआ? अरे, बाप कहते हैं शरीर गया। सो तो सबका जाना है। कोई को भी रहना न है। "आज हमा ,कल तमा" हम पार्टधारी हैं। इसमें जरा भी संशय की बात नहीं। सभी खलास होंगे। यह तो जनावरों की दुनियां है। हम जाते हैं सतयुगी फूलों की दुनियां में। फिर कांटों में मोह क्यों होना चाहिए? 63जन्म तुम भक्तिमार्ग के यह शास्त्र पढ़ते पूजा करते आये हो। पूजा भी पहले2 तुमने शिव की की है। तब ही तो....सोमनाथ का मंदिर बनाया है। मंदिर तो सभी राजाओं के घर में थे। कितने हीरे–जवाहर थे। पीछे आकर चढ़ाई की है। एक मंदिर से भी कितना ले गए। तुम ऐसे धनवान ,विश्व के मालिक बनते हो। यह विश्व के मालिक थे ना ;परंतु इन्हों के राज्य को कितना वर्ष हुआ यह कुछ भी पता नहीं है। बाप कहते हैं 5000वर्ष हुए हैं। 2500वर्ष तो राज्य किया। फिर बाकी 2500वष्र में इतने मठ–पंथ आदि वृद्धि को पाते हैं। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। अथाह मिलकीयत मिलती है। दिखाते हैं सागर से देवता निकल रत्नों का थाली भर कर देते हैं। अभी तुमको ज्ञान रत्नों की थाली भरपूर मिलती है। बाप ज्ञान का सागर है ना। कोई तो अच्छी रीत झोली भरते हैं, कोई की रह जाती है। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे वह जरूर अच्छा धनवान बनेंगे। राजधानी स्थापन होती है। यह सब भी ड्रामा में नूंध है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं उनको ही स्कॉलरशिप मिलती है। यह है ईश्वरीय स्कॉलरशिप अविनाशी। वह है आसुरी विनाशी। सीढ़ी बड़ी वंडरफुल है। 84जन्मों की कहानी है। बाबा तो कहते छत जितनी बड़ी सीढ़ी बनाओ। ऐसे ट्रांसलाइट हो जो क्लीयर दिखाई पड़े। तो मनुष्य देख वंडर खावे। फिर तुम्हारा नाम भी बाला होता जावेगा। अभी जो सिर्फ फेरी पहन जाते हैं वह फिर आवेंगे। दो/चार बारी फेरी पहन फिर तकदीर में होगा तो जम जावेंगे। शमा तो एक ही है। जावें कहां? बहुत मीठा भी बनना है। मीठा तब बनेंगे जब योग में होंगे। योग से ही कशिश होगी। यह सीढ़ी सभी आत्माओं को जाने की है। फिर उतरना है। जावेंगे फट से। फिर नम्बरवार आवेंगे। वंडर है। हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट कैसे होती है। किसने यह समझाया उनको तो याद करना चाहिए ना। ऐसे नहीं शिवबाबा चला गया, फिर आवेगा नहीं। बाप तो ओमनीप्रजेंट है। वहां ओमनीप्रजेंट है माया। यहां बाप। ओम।